

## भारत की प्रथम संचार क्रान्ति : एक ऐतिहासिक विश्लेषण

डॉ० मनोज कुमार तिवारी\*

औपनिवेशिक भारत में जन्म लेने वाली भारत की प्रथम संचार क्रान्ति की द्योतक भारतीय तार-प्रणाली ने जहाँ एक तरफ में ब्रिटिश साम्राज्य के ढांचे को मजबूत किया वहीं दूसरी तरफ भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रसार, सफलता एवं राष्ट्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। संचार के तेज एवं प्रभावी साधन किसी क्षेत्र, समाज अथवा राष्ट्र के निर्माण एवं विकास में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।<sup>1</sup> ये साधन प्रभावशाली प्रशासन, समुचित आन्तरिक एवं वाह्य सुरक्षा, कृषि, उद्योग, व्यापार के विकास, पूँजी के प्रसार, गाँवों एवं शहरों के समग्र विकास, राष्ट्रीय आय के समुचित विकास एवं वृद्धि<sup>2</sup> में सहायक होते हैं। ये साधन जहाँ एक तरफ किसी भी समाज के सामाजिक आर्थिक राजनीतिक एवं वाणिज्यिक प्रगति को रेखांकित करने वाले पैमाने होते हैं वहीं दूसरी तरफ औपनिवेशिक एवं साम्राज्यवादी शक्तियों के शोषण एवं शिकजें में वृद्धि में भी सहायक होते हैं। शायद इसीलिए राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत शक्तियों के द्वारा इन्हें सबसे पहले निशाना बनाया जाता है। उदाहरण के लिए भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन इसका प्रमाण है।

उन्नीसवीं दशक के मध्याह्न में भारत की प्रथम संचार क्रान्ति के रूप में तार प्रणाली की स्थापना हुई। भारत विश्व के उन प्रारम्भिक देशों में से एक था जहाँ कि एक सफल तार प्रणाली की स्थापना की गयी। यह डॉ० विलियम ब्राइट ओशंधनेसी ब्रुक के अग्रणी प्रयासों के कारण संभव हो सका। ओशंधनेसी कलकत्ता मेडिकल कालेज में सहायक सर्जन तथा रसायन शास्त्र के प्रोफेसर थे।<sup>3</sup> इन्होंने पहली बार 1839ई० में कलकत्ता से डायमण्ड हार्बर के मध्य 21 मील की दूरी में विद्युत तार प्रणाली का सफल प्रदर्शन किया।<sup>4</sup> लगभग इसी समय के आस-पास संयुक्त राज्य अमेरिका में सैमुअल मोर्स ने बाल्टिमोर से वाशिंगटन के बीच तार लाइन स्थापित किया था।<sup>4</sup> भारत में डॉ० ओशंधनेसी का यह प्रयत्न गैर सरकारी एवं अधुरा था।

भारत के गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी के कार्यकाल में 1850ई० में इस्ट इण्डिया कम्पनी के बोर्ड आफ डायरेक्टर्स ने सरकारी तौर पर तार प्रणाली की आवश्यकता को महसूस करते हुए, इसके निर्माण को संस्तुती प्रदान की। जिसके फलस्वरूप 1851 में कलकत्ता से डायमण्ड हार्बर के मध्य (30) तीस मील की दूरी तक विद्युत तार लाइन का निर्माण सम्पन्न हुआ तथा उसे सरकारी स्तर पर प्रयोग के लिए प्रारम्भ कर दिया गया।<sup>5</sup> गवर्नर जनरल डलहौजी ने साम्राज्यवादी उद्देश्यों की पूर्ति में इसके व्यापक महत्व का अनुभव करते हुए इस वैज्ञानिक अविष्कार को शक्ति के इंजन (An Engine of Power) की संज्ञा दी तथा इसके प्रसार के लिए गंभीर प्रयत्न प्रारम्भ किया। डलहौजी ने 1852ई० में इलेक्ट्रिक टेलीग्राफ विभाग की स्थापना की तथा विलियम ओशंधनेसी को इसका अध्यक्ष बनाया। 1853ई० से विद्युत तार-प्रणाली का व्यापक स्तर पर प्रसार प्रारम्भ हुआ 1853-54 ई० में कलकत्ता से आगरा को विद्युत तार प्रणाली द्वारा जोड़ दिया गया।<sup>6</sup> 1854ई० में ही भारत में विद्युत तार प्रणाली के नियंत्रण, देख-भाल एवं प्रबन्धन के लिए एक अधिनियम<sup>7</sup> पारित किया गया। 1855ई० में कलकत्ता से आगरा तक की तार लाइन को आगे बढ़ाते हुए बम्बई एवं मद्रास को इस प्रणाली से जोड़ दिया गया।<sup>8</sup> 1856ई० तक पेशावर को तार लाइन के द्वारा कलकत्ता से जोड़ दिया गया। इस समय तक भारत में चार हजार मील लम्बी तार (टेलीग्राफ) लाइन का निर्माण तथा 46 टेलीग्राफ स्टेशनों की स्थापना कर दी गयी एवं इसके माध्यम से देश के सभी प्रमुख नगरों अर्थात् कलकत्ता, आगरा, बम्बई-मद्रास एवं पेशावर को जोड़ दिया गया।

भारतीय तार प्रणाली को 1855ई० में आम जनता के उपयोग के लिए खोल दिया गया।<sup>9</sup> जिसके कारण देश में तीव्र गति से सूचनाओं एवं विचारों के आदान-प्रदान के एक नये युग एवं पद्धति की शुरुआत हुई। इसके तीव्र प्रसार ने संचार सुविधाओं के क्षेत्र में क्रान्तिकारी विकास को जन्म दिया। यद्यपि कि तार प्रणाली का यह तीव्र प्रसार, अंग्रेजों के द्वारा अपने साम्राज्यवादी उद्देश्यों की पूर्ति एवं

\* असि० प्रोफेसर, इतिहास विभाग, दी०द०उ०गो०वि०वि०, गोरखपुर

ब्रिटिश भारत की सुरक्षा तथा एक दृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए किया गया परन्तु समय के साथ इससे आम भारतीय भी लाभान्वित हुए।

1857 के महाविद्रोह के समय इस तार प्रणाली ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य को बचाने में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। ब्रिटिश इण्डिया सरकार को बिद्रोह के दमन में तार प्रणाली से भरपूर मदद मिली। दूसरी तरफ विद्रोहियों ने कम्पनी सरकार एवं सेनाओं की गतिशीलता को प्रभावित करने के लिए मेरठ, अम्बाला इत्यादि शहरों के टेलिग्राफ आफिसों पर हमला कर तार व्यवस्था को नष्ट कर दिया। इस विद्रोह के समय तार व्यवस्था की भूमिका को स्पष्ट करते हुए गवर्नर जनरल ने भारत सचिव को अपने डिस्पैच में लिखा कि— विद्युत तार प्रणाली ने आपात काल के दौरान भारत को बचा लिया।<sup>10</sup>

तार व्यवस्था से अंग्रेजों को अधिक लाभ हुए परन्तु समय के साथ भारतीय लोग भी कम से कम समय में सुदूरवर्ती इलाकों से सूचनाएं प्राप्त करने अथवा प्रेषित करने में समर्थ हुए। अंग्रेजों के साथ-साथ देशी व्यापारी भी इससे लाभान्वित हुए। तार के माध्यम से उन्हें कलकत्ता से पेशावर तक के बाजारों के प्रत्येक घण्टे के उतार-चढ़ाव की जानकारी प्राप्त होने लगी।<sup>11</sup> जिससे उनके लाभ में वृद्धि हुई एवं व्यापारिक गतिविधियों में क्रान्तिकारी परिवर्तन होने लगा। इस प्रणाली ने सही मायने में पहली बार व्यापार को एक वैश्विक स्वरूप प्रदान करने में सफलता प्राप्त की।

1856 से पहले विद्युत तार व्यवस्था गृह विभाग के पब्लिक ब्रांच के अन्तर्गत आती थी। परन्तु इसी समय गृह विभाग में एक अलग टेलीग्राफ ब्रांच की स्थापना की गयी तथा 1857ई0 में टेलिग्राफ के लिए एक डायरेक्टर जनरल का पद सृजित कर सर विलियम ओशंधनेशी को पहला डायरेक्टर जनरल आफ टेलीग्राफ<sup>12</sup> बनाया गया।

1859ई0 तक तार सन्देश राजस्व से सम्बन्धित स्टैम्प पेपरों पर लिखे जाते थे। परन्तु 1860 से तार सन्देशों के लिए विशेष तार टिकटों का प्रयोग किया जाने लगा। बाद में इसके लिए सामान्य डाक टिकटों का प्रयोग प्रारम्भ हुआ।<sup>13</sup> अगस्त 1867ई0 में विद्युत तार प्रणाली से सम्बन्धित विषय गृह विभाग से विदेश विभाग को हस्तान्तरित कर दिया गया।<sup>14</sup> 30 अप्रैल 1870 को तार प्रणाली को पुनः विदेश विभाग से लेकर सार्वजनिक कार्य विभाग (P.W.D.) को सौंप दिया गया।<sup>15</sup> 1 मार्च 1905 को वाणिज्य एवं उद्योग विभाग की स्थापना कर, डाक के साथ ही साथ तार व्यवस्था को पी0डब्ल्यू0डी0 से लेकर इस नये विभाग को सौंप दिया गया।<sup>16</sup> परन्तु इस समय तक डाक एवं तार की अलग-अलग शाखाओं को एक साथ मिलाने के प्रयत्न किये जाने लगे थे। 1912 ई0 में डाक एवं तार को प्रयोग के तौर पर बम्बई एवं मध्य क्षेत्र में एक साथ मिला दिया गया। इस व्यवस्था की सफलता से प्रोत्साहित हो कर दोनो शाखाओं को 1 अप्रैल 1914 को एक साथ मिला दिया गया तथा डाक एवं तार के लिए एक ही डायरेक्टर जनरल की नियुक्ति की गयी।<sup>17</sup> सर चार्ल्स स्टीवर्ड विल्सन को डाक-तार की संयुक्त व्यवस्था का पहला महानिदेशक बनाया गया। 3 अगस्त 1921ई0 को डाक एवं तार को पुनः वाणिज्य विभाग से पी0डब्ल्यू0डी0 को हस्तान्तरित कर दिया गया। 16 अप्रैल 1923 को डाक एवं तार को उद्योग एवं श्रम विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में दे दिया गया। 8 नवम्बर 1937 को एक नये संचार विभाग की स्थापना कर, डाक एवं तार उसके नियंत्रण में दे दिया गया द्वितीय विश्वयुद्ध के काल में 1942ई0 में संचार विभाग को दो भागों में विभाजित किया गया जिसके परिणाम स्वरूप अस्तित्व में आये पोस्ट एण्ड एअर डिपार्टमेन्ट (डाक एवं वायु विभाग) के अन्तर्गत डाक एवं तार से सम्बन्धित समस्त कार्यकलाप आ गये। 1946ई0 में पुनः इस विभाग को पुनर्गठित कर संचार विभाग का नाम दिया गया। इसी केन्द्रीय व्यवस्था के अन्तर्गत विद्युत तार प्रणाली का 1947 तक पूरे देश में विकास एवं विस्तार किया गया।

अखिल भारतीय स्तर पर तार प्रणाली का तीव्र प्रसार डाक एवं तार के संयुक्त कार्यालयों की स्थापना के कारण सम्भव हो सका। इस व्यवस्था के अन्तर्गत तार प्रणाली को देश के विभिन्न भागों में स्थापित डाकघरों की शाखाओं में ही स्थापित किया गया। यह व्यवस्था अर्थात् संयुक्त कार्यालयों की स्थापना की व्यवस्था 1883ई0 से ही लागू कर दी गयी थी तथा एक वर्ष के अन्दर ही इसके अच्छे परिणाम आने लगे थे। इस एक वर्ष में ही तार आफिसों की संख्या 55 से बढ़ कर 267 हो गयी थी।<sup>18</sup> डाक एवं तार के लिए संयुक्त कार्यालयों की व्यवस्था को लागू किये जाने के पश्चात् प्रति वर्ष तार

कार्यालयों की संख्या बढ़ती गयी स्वतंत्रता की प्राप्ति तक भारतीय तार प्रणाली ने विभिन्न देशों के साथ ही देश के लगभग सभी प्रमुख भागों तक अपनी पहुंच बना ली थी।

राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान आन्दोलनकारियों ने ब्रिटिश शासन के प्रतीक के रूप में तार व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने के लिए उस पर विभिन्न तरह से आक्रमण किये जिससे तार व्यवस्था को अपूरणीय क्षति हुई।

आजादी के पश्चात् 01 जून 1949 को देश के नौ तार घरों—आगरा, इलाहाबाद, जबलपुर, कानपुर, पटना, वाराणसी आदि में हिन्दी में तार भेजने की शुरुआत की गयी। और पहली पंचवर्षीय योजना में तमाम दुर्गम इलाकों में तार लाइनें पहुँचायी गयीं। सिक्किम में खांबजांग में दुनिया की सबसे ऊँची तार लाइन इसी दौरान पहुँची। तेजगति से तार बाटने के लिए पहली बार 1949—50 में मोटर सायकिल उपलब्ध कराने की भी कोशिश शुरू हुई। 1953—1954ई0 में देवनागरी में 28503 टेलीग्राम बुक किये गये। इसी साल प्रयाग कुंभ मेले में डाक—तार विभाग के शिविर में 7000 तार बुक किये गये।<sup>19</sup> सन् 1957ई0 तक हिन्दी तार सेवा का विस्तार 1250 डाकतार घरों तक हो गया था। भारतीय तार की बढ़ती उपयोगिता का एक उदाहरण देश के दूसरे प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की मौत पर उनकी पत्नी ललिता शास्त्री के पास पहुँचे शोक सन्देशों से लगाया जा सकता है। उस समय 10 जनपथ, नई दिल्ली को केन्द्रीय तार घर से शास्त्री जी की मौत के बाद पहले दिन 2040 बाहर के तार पहुँचे 11 जनवरी 1966 को पहुँचने वाले तारों की संख्या 10160 थी जबकि 12 जनवरी को 7690 शोक संदेश पहुँचे।<sup>20</sup> देश में 1973—74 ई0 तक तार घरों की संख्या 17137 हो गयी थी। इस साल 614 लाख अंतर्देशीय तार बुक किये गये। सरकार ने तार की महत्ता को पहचानते हुए कुछ प्रमुख तारघरों में चौबीस घण्टें तार बुकिंग की सुविधा मुहैया करायी। इससे लोगों को बहुत फायदा हुआ। तथा 20.6 लाख तार विदेशों से आये। सन् 1975 में 635 लाख देशी तथा 21.2 लाख विदेशों के लिए तार बुक किये गये। सन् 1981—82 तक देश में तारघरों की संख्या बढ़ कर 31457 हो गयी और अकेले देशी तार बुकिंग 714 लाख हुई। 1985—86 ई0 में देश में तार कार्यालयों की संख्या 45000 तक पहुँच गयी तथा इस वर्ष लगभग 6 करोड़ टेलीग्राम बुक किये गये।

नये एवं तिब्रगति के आधुनिक संचार माध्यमों के अविष्कारों ने संचार के क्षेत्र में नित नयी क्रान्तियों को जन्म दिया जिससे विश्व की पहली संचार क्रान्ति के द्योतक तार व्यवस्था की जड़े हिलने लगीं। 1876ई0 में टेलीफोन का अविष्कार हुआ और यह सूचनाओं के आदान—प्रदान का सबसे तेज माध्यम साबित हुआ। भारत में पहला टेलीफोन एक्सचेंज 1882ई0 में ओरियंटल टेलीफोन कम्पनी ने लाइसेंस प्राप्त कर खोला था तत्पश्चात् कलकत्ता मद्रास, बम्बई, रंगून, कराची टेलीफोन सेवा से जुड़े। परन्तु 1921 तक देश में कुल 10703, 1953—54 तक कुल 2.20 लाख तथा 1968—1969 तक कुल 11.20 लाख एवं 1973—1974 तक 16.4 लाख फोन कनेक्शन ही भारत में लग पाये थे।<sup>21</sup> अर्थात् आमजन तक टेलीफोन की पहुँच न होने के कारण तार व्यवस्था ने टेलीफोन की चुनौती को झेल लिया। 1980 के बाद भारत में फैक्स का प्रचलन प्रारम्भ हुआ और तबसे टेलीग्राफ की जगह फैक्स का प्रयोग बढ़ने लगा। 1980 के दशक में ही जगह—जगह पी0सी0ओ0 प्राइवेट काल सेन्टर के रूप में खुलने लगे साथ ही इण्टरनेट के विकास ने सूचना के क्षेत्र की सबसे आधुनिक क्रान्ति को जन्म दिया। भारत में इण्टरनेट 1990 के दशक से प्रारम्भ हुआ और ई—मेल के जरिये सूचनाओं को भेजना एवं प्राप्त करना बहुत आसान हो गया। इन सभी नवीन संचार उपकरणों के कारण तार पिछड़ता गया तथा इसका प्रयोग बहुत सीमित हो गया।

1990 के दशक तक भारतीय तार व्यवस्था डाक विभाग के अधीन थी। परन्तु 1990 में भारतीय दूर संचार कम्पनी भारत संचार निगम लिमिटेड (बी0एस0एन0एल0) के अन्तर्गत तार व्यवस्था को लाया गया। 20वीं शदी के अन्त एवं इक्कीसवीं शदी के प्रारम्भ में हुई मोबाइल फोन क्रान्ति ने सूचनाओं के आदान—प्रदान को अत्यन्त आसान एवं सर्वसुलभ बना दिया जिससे तार व्यवस्था अप्रासंगिक होती गयी। तार व्यवस्था की उपयोगिता कम होने के कारण बी0एस0एन0एल0 के लिए आर्थिक रूप से यह बोझ बनने लगा। यद्यपि कि सरकार ने मई 2011 में टेलीग्राम का शुल्क बढ़ा कर 27रु0 प्रति 50 शब्द कर दिया जिस पर सरचार्ज अलग से देना होता था। इसके बावजूद भारत संचार निगम लिमिटेड को तार सेवा से सलाना 300 से 400 करोड़ रुपये की हानि होने लगी जिसके कारण उन्नीसवीं शदी के मध्य की संचार क्रान्ति की द्योतक भारतीय तार प्रणाली को बन्द करने का निर्णय लिया गया। 14 जुलाई 2013

को इसे अन्ततः बन्द कर दिया गया। तथा इसके लगभग 1000 कर्मचारियों को बी0एस0एन0एल0 की अन्य सेवाओं में तैनात कर दिया गया।

एक सौ तिहत्तर साल के अपने सफर में भारतीय तार व्यवस्था ने अनेक सोपानों से गुजरते हुए इतिहास को तीव्र रूप से प्रभावित किया है। तार व्यवस्था ने अपनी स्थापना के प्रारम्भिक दशकों में जहाँ भारत में साम्राज्यवादियों की क्षमता एवं औपनिवेशिक शोषण में वृद्धि की वहीं इसने राष्ट्रवाद के विकास को भी बल प्रदान किया। राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान आन्दोलनकारियों ने जहाँ इसे ब्रिटिश साम्राज्य का प्रतीक मानते हुए नष्ट किया वहीं कई अवसरों पर अपने को संगठित करने के लिए इसका प्रयोग भी। स्वतंत्रता के पश्चात् तार व्यवस्था ने दशकों तक भारतीयों की संचार सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ ही साथ राष्ट्र निर्माण एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

अशिक्षा के कारण ग्रामीण भारतीय परिवेश में तार के संदेश लिखना, लिखवाना, पढ़ना, समझना भी रोजगार का एक माध्यम था। भारतीय सीमाओं पर तैनात सेना के जवानों एवं सूदूरतवर्ती स्थानों तथा अन्य देशों में रोजगार रत लोगों के लिए अपने पारिवारिक सदस्यों एवं रिश्तेदारों से सुख-दुख की सूचनाओं को साझा करने का लगभग एक शताब्दी तक सबसे सशक्त एवं लोकप्रिय माध्यम, तार व्यवस्था ही था। तार ग्राम्य परिवेश ही नहीं बल्कि शहरी परिवेश के लोगों के लिए भी एक भय एवं आश्चर्य मिश्रित उत्तेजना के मनोवेग का प्रतीक था। इसने भारत के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक इतिहास को शताब्दियों तक अत्यन्त ही गहराई के साथ प्रभावित किया। भारतीय तार व्यवस्था ने लोगों के हर्ष, विषाद, प्यार एवं घृणा जैसे सभी भावनाओं का आदर करते हुए भारत के निर्माण एवं विकास में अपनी भूमिका का सकुशल निर्वाह किया।

#### संदर्भ :

- 1- टी.के. जैन, ट्रान्सपोर्ट इकोनामी, इलाहाबाद, 1979, पृ0 12।
- 2- लारेन्स ए हाफमैन, इकोनामिक ज्योग्राफी, न्यूयार्क, 1965, पृ0 529।
- 3- एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्मस् कमीशन रिपोर्ट टू वर्किंग ग्रुप आन पोस्ट एण्ड टेलीग्राफस, गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया, नई दिल्ली, 1969, पृ0 7।
- 4- वही,।
- 5- गाइड टू द रिकार्ड्स इन द नेशनल आर्काइव्स आफ इण्डिया, पार्ट II, होम डिपार्टमेन्ट, मिनिस्ट्री आफ होम अफैयर्स (1784-1957), नई दिल्ली, 1977, पृ0 122।
- 6- एम0 जहीर एण्ड जगदेव गुप्ता, द आर्गनाइजेशन आफ द गवर्नमेन्ट आफ उत्तर प्रदेश, ए स्टडी आफ स्टेट एडमिनिस्ट्रेशन, 1970, नई दिल्ली, पृ0 8।
- 7- लेजिस्लेटिव डिपार्टमेन्ट, एक्ट नं0 XXXIV, आफ 23 दिसम्बर 1854।
- 8- गाइड टू द रिकार्ड्स इन द नेशनल आर्काइव्स, आफ इण्डिया, पार्ट II, पूर्वोद्धत, पृ0 122।
- 9- वही।
- 10- एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्मस् कमीशन रीफेर्ट टू वर्किंग ग्रुप आन पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ, पूर्वोद्धत।
- 11- डब्ल्यू0 क्रूक, द नार्थ बेस्टर्न प्रोविन्सेज आफ इण्डिया : देयर हिस्ट्री इथोनोलाजी एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, वाराणसी, 1971, पृ0 166।
- 12- गाइड टू द रिकार्ड्स इन द नेशनल आर्काइव्स आफ इण्डिया, पार्ट II, पूर्वोद्धत, पृ0 122-123।
- 13- एम0 जहीर एण्ड जगदेव गुप्ता, पूर्वोद्धत, पृ0 8।
- 14- होम (पब्लिक) 'ए' अक्टूबर 1867, नं0 86-91, पृ0 3 नोट्स एन0ए0आई0।
- 15- होम (पब्लिक), 7 मई, 1870, नं0 156; फारेन डिपार्टमेन्ट रिसोल्यूशन नं0 367-टी, 30 अप्रैल 1870 एन0ए0आई0।
- 16- होम (पब्लिक) 'ए' अप्रैल 1905, नं0 151-157, पृ0 23, स्टेटमेंट 'ए', एन0ए0आई0।
- 17- गाइड टू द रिकार्ड्स इन द नेशनल आर्काइव्स आफ इण्डिया पार्ट II, पूर्वोद्धत, पृ0 123।
- 18- एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्मस् कमीशन रिपोर्ट टू वर्किंग ग्रुप आन पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ, पूर्वोद्धत, पृ0 8।
- 19- अरविन्द कुमार सिंह, भारतीय डाक-सदियों का सफरनामा, एन बी0टी0 नई दिल्ली 2009, पृ0 234।
- 20- वही, पृ0 344।
- 21- वही, पृ0 339-41।